पेड़ पुकारते हैं हमें

डॉ. आशा सिंह सिकरवार

जब रात में सो रहे होते हैं पेड़
धूप और चिड़िया के स्वप्न में
डूबे होते हैं तब
वे आरियाँ चलाते हैं अंधेरे में चुपचाप

धडाम ... धडाम ... गिरते जाते हैं जमीन पर
सोये हुये पर प्रहार
कायरता की निशानी है
धूप और चिड़िया स्वप्न में ही क्षत-विक्षत
पेड़ ताकते हैं बस्तियों की ओर ...

अंधेरें में
सुलग उठती हैं बस्तियाँ
जलकर राख हो जाते हैं जंगल
उनका रूदन हवा के पेट को
चीरता हुआ खोजता है जवाब ...

नहीं बजता पेड़ के पेट में पानी
मूकदर्शी चुप्पी में लुका-छिपी खेलते हैं
किसकी शामत आयी है डाल दें
शेर के जबड़े में हाथ
हो जाये शहीद
वह निगल रहा है।
हवा, पानी, रोटी

खाली इमारतों की खातिर
झुग्गी-झोपड़ियों में बसे लोग मारे जा रहे हैं
बुझ जाती हैं सुलगकर चिंगारियां
नीले गहरे कुंऐ में जो गिरती हैं बाल्टियां

वे पेड़ काट रहे हैं
काट रहे हैं कमजोर हाथों को
बुद्ध भी नहीं दिखा पायेंगे इन्हें राह
नशे में चूर हैं

रात-रात भर चलती हैं आरियां
सुबह आंखों में मैदान निकल आते हैं
भीतर ही भीतर रोते हैं पेड़

पुकारते हैं- 'बचाओ' ...

शिकारी काट रहा है पेड़ पे पेड़
आरियां चल रही हैं रोटी पे
आरियां चल रही हैं बच्चों की नींदों में
आरियां चल रही हैं धरती के बछड़ों पे

शिकारी ले जाता है रोड़ूं का
सबसे स्वादिष्ट हिस्सा
छोड़ जाता है घास-फूस, पत्ता
बकरियां-भेड़ें चरेंगी-बनेगा
उनके स्तनों में गुनगुना दूध एकाद दिन
जब हम सो रहे होते हैं रात में
तब पेड़ पुकारते हैं हमें
नहीं होंगे पेड़ तब हम भी चीखेंगे एक दिन
हम किसे पुकारेंगे? ...

संपर्क करें:
डॉ. आशा सिंह सिकरवार
609 बी, दीपाली नगर,
आदिनाथनगर, ओढव
अहमदाबाद-382 415
मो. 8487877979